# भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

| | | |
|---|---|---|
| वर्ष–4, अंक–4 | सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी | वार्षिक चन्दा–25.00 |
| शुक्रवार, 25 अप्रे. ' 80 | मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे–श्री विमल दवे | प्रति अंक : 2.25 |


## प.पू. प्र. ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी और.......हमारा सम्बन्ध

परात्पर पुरुषोत्तमनारायण का परम सत्यस्वरूप पृथ्वी पर अभी तक अखण्डित विद्यमान है और अखण्डित रहने वाला है। अतः जीवों के आत्यंतिक कल्याण का मार्ग भी सदा सर्वदा–सब काल में अखण्डित है और अखण्डित रहने वाला है। श्री सहजानंदस्वामी ने यह मूल्यवान भेंट मानव जाति को उनकी असाधारण करुणा के कारण प्रदान की है।

शुद्ध परंपरा के रूप में यह भेंट आज भी हमारे समक्ष प्रस्तुत है–प्रत्यक्ष है। 'सन्त ते स्वयं हरि'–अर्थात् संत साक्षात् परमात्मा है........। आज ऐसे सन्तों में एक प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी हैं। उन्होंने गुरुहरि ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की विरासत अपनाई है, निभाई है। गुणातीत समाज उनकी 47वीं जन्म जयंती दिनांक 4 मई के दिन मनायेंगे। गुणातीत समाज के लिये यह प्रसंग अत्यंत गौरवपूर्ण है।

प्राचीनकाल से असली संत का महिमागान हुआ है। किन्तु, महाराज ने स्वयं वचनामृत प्र. 27 में स्पष्ट कहा है कि वडवानल अग्नि स्वरूप संत हमारा प्रगट स्वरूप है। इस वचन की प्रतीतिपूर्वक प्रामाणिकता गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने अक्षर पुरुषोत्तम की प्रकट युगल उपासना के रूप में सिद्ध कर दी। हमारा यह सौभाग्य है कि हमने ऐसे निर्गुण ब्रह्मस्वरूप को चैतन्यस्वरूप में पहचाना !

हालांकि उपर्युक्त विरासत को धारण करने वाले प.पू. स्वामीजी के बारे में लिखना असम्भव जैसा है, क्योंकि चिदाकाश के स्वरूप ऐसे होते हैं कि इनका वर्णन करते हुए वाणी विराम प्राप्त करती है....! ये सांसारिक महिमा से ऊपर उठे हुए होते हैं। श्रुति भगवती कहती हैः

'यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।' अतः वे वाणी या मन के विषय नहीं है।

किन्तु हम इतना तो देख सकते हैं कि इनके पास एकांतिक भक्तों की भीड़ निरन्तर विद्यमान है। इतना ही नहीं इनके आश्रित सन्तो, युवकों, बहनों और गृहस्थापार्षदों के आधिभौतिक, आधि दविक और आध्यात्मिक-सांसारिक त्रिविध ताप प.पू. स्वामीश्री के स्मरण मात्र से नष्ट होते हैं और जीवों का सांसारिक एवं आंतरिक जगत का संबंध, तज्जन्य वासनाएं और उसके मूल में स्वभावजन्य जो वृत्तियाँ हैं वे शीघ्र नष्ट होती हैं और वे मुमुक्षु से मुक्त होने की ओर अग्रसरित होते हैं। यह है भगवतस्वरूप संत की अनोखी विशिष्टता जो प.पू. स्वामीश्री के मंगलकारी प्राकट्य दिन के संदर्भ में स्मरणीय एवं चिंतनीय है। यह उनकी भगवत्ता है जो हमारे चित्त की हरहमेश खींच रखती है।

आज के विश्व की ओर दृष्टि करते हैं तो उसके बारे में हमें यह लगता है कि यह अश्रद्धा का युग है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सबसे बड़ी आपत्ति यह आई है कि मनुष्य की श्रद्धा छिन्न हो गई है। जीवन की तीन प्रमुख श्रद्धाएं टूट गई हैं......

(1) परमात्मा में और उनके शासन में आज अश्रद्धा है,

(2) मनुष्य को दूसरे मनुष्य में श्रद्धा नहीं है और

(3) मनुष्य को अपने आप में श्रद्धा नहीं है। परिणाम रूप इनको परमात्मा, जगत और स्वयं का जीवन absurd लग रहा है। मनकी भूमि पर महाभारत चल रहा है और आसुरी बलों के सामने सब नष्ट हो रहा है।

एक ओर से तो यह हालत है। दूसरी ओर विश्व में अब व्यक्ति धन, मान, सत्ता, स्त्री आदि की वासना से ऊब रहा है। 'हरे राम हरे कृष्ण' आदि विविध धर्मसम्प्रदायों का आश्रय यूरोप-अमेरिका के लोग ले रहे हैं और....इसके पीछे मूल हेतु शुद्ध आत्म प्रतीति (identity) की खोज है। समुद्रमंथन चल रहा हा–अमृत की खोज अभी हो रही है। व्यक्ति मूल्यों की खोज में है, क्योंकि पुराने सारे मूल्यों ने अपनी सार्थकता गंवाई है। अब ढोंग नहीं चलेगा, अब थोथी श्रद्धा नहीं चेलगी, अब चलेगा प्रेम पारावार द्वारा सिद्ध सहृदयभाव !

यह ही एक रास्ता है जो अन्ततोगत्वा मानव का अंतिम निःश्रेयस् सिद्ध कर सकेगा और प.पू. स्वामीश्री ने सहृदयभाव के दरवाजे प्राणिमात्र के लिये खोल दिये हैं, इतना ही नहीं, इसके परिणाम भी आने लगे है। श्री अक्षपुरुषोत्तम संस्था के आध्यस्थापक प.पू. ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज ने न केवल मन्दिरों का निर्माण किया है, न केवल मूर्तियों की प्रतिष्ठा की है किन्तु अपने पारस स्वरूप से पारस स्वरूपों की रचना भी की है। वह ही कार्य आज प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामीश्री की त्रिपुटी कर रही है। प.पू. स्वामीश्री का योगदान इसमें इतना उत्तम है, इतना स्पष्ट है कि इसके बारे में अधिक स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है।

प.पू. स्वामीश्री की विशेषतया यह है कि वे एक ओर से उदासीन और योगस्थ है, अपनी

आत्मा में निरन्तर महाराज के साथ सम्बन्ध में है तो दूसरी ओर सांसारिक जीवों के कल्याण के लिये पद-पद पर संसार में सक्रिय है। इनके चित्त का एक छोर निरन्तर अक्षरधाम के साथ जुड़ा हुआ है और दूसरा छोर समाज के अजीबोगरीब के साथ जुड़ा हुआ है। 'सतत समाधि, सतत विचरण'—यह प.पू. स्वामीश्री की जीवनचर्या बन चुकी है।

इसका उद्देश्य क्या है? एक ऐसे जगत का निर्माण कि जहां कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार से दुःखी न हो। इस उद्देश्य की परिपूर्ति के लिये इन्होंने एक सीधा-सादा, स्पष्ट मार्ग अपनेजीवन के माध्यम से दिखलाया है—'प्राणीमात्र की सहृदयी बन कर सेवा कीजिए'। इससे जगकल्याण तो होगा ही किन्तु अपना चित्त शुद्ध, बुद्ध, मुक्त बन जाएगा और अन्य की सेवा करने के कारण-ममत्वहीन सेवा करने के कारण आत्मा की सहृदयी भावना का विस्तार होगा और वह ही है अहम् की विनष्टि करके परमात्मतत्व या अक्षरधाम की ओर जाने का सुगम राजमार्ग। इस गुणातीत समाज की एक और विशेषता यह है—**'माहात्म्य युक्त सेवा करने वाले की ओर गुणातीतपुरुष की अखण्ड दृष्टि रहती है, अखण्ड प्रसन्नता भी रहती है** और परिणामस्वरूप सहृदयी सेवक के चित्तादर्श (चित्तरूपी दर्पण) में छवि पड़ने लगती है—सांसारिक चित्रों की नहीं किन्तु अक्षरधाम निवासी पूर्ण पुरुषोत्तम स्वामिनारायण भगवान की।'

सेवा स्मृति, सहृदयभाव, सरलता, सुरुचि आदि शब्द प.पू. स्वामीश्री के शब्दकोश के विशिष्ट शब्द है जिनको वे न केवल जीह्वा से किन्तु कर्तव्य से ध्वनित करते हैं। इनका मौन भी इन शब्दों से सभर है। इनके चारों ओर के शान्त वातावरण में इन शब्दों जिनकी संज्ञा है उन भावों गुँजते रहते हैं। यह अनुभूति प.पू. स्वामीश्री के संयोग में आने वाले को इतनी सहजता पूर्वक होती है कि इसके बारे में लिखना आवश्यक नहीं है। प.पू. स्वामीश्री के सामिप्य में पहुँच जाइए, अपने घर में बैठे-बैठे इनका सान्निध्य पा लीजिए—आप स्वयं इसकी अनुभूति करेंगे और आधि, व्याधि, उपाधि से मुक्त हो जाएंगे।

यह कैसा भी युग भले हो, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामीजी की त्रिपुटी ने बीड़ा उठाया है—अतिमानस के दिव्य अवतरण की अनुभूति कराने का ! महर्षि अरविंद के एक भक्त ने लिखा है कि चैतन्यस्वरूपों द्वारा दिव्यता का अवतरण होता है तब पृथ्वी के पार्थिव तत्त्वों भी जोरों से अपने सर उठाते हैं। आज की जागतिक परिस्थिति को इसी रूप में ही देखनी चाहिए। वास्तव में यह अश्रद्धा का युग नहीं है, दिव्यता के अवतरण की अनुभूति का युग है। इस युग को पृथ्वी पर उतारने का—पार्थिव तत्त्वों की उपेक्षा करके एक ब्रह्मनियंत्रित दिव्य समाज स्थापित करने का पुरुषार्थ सामान्य नहीं है।

प.पू. स्वामीश्री का सतत विचरण इस पुरुषार्थ का ही अंग है। स्वयं तो नित्य अक्षरधामविहारी है, उनके लिए तो किसी भी प्रकार का कर्त्तव्य शेष नहीं रह गया है, उन्हें किसी भी प्रकार का स्वार्थ सिद्ध नहीं करना है। इस अमृत पुरुष को

जगत से कुछ भी नहीं चाहिए। परन्तु, तब प्रश्न होता है कि वे क्यों इतना बड़ा कर्मजाल बुन बैठे हैं? क्यों अनेक लोगों को इसमें लगाये बैठे है? इसका स्पष्ट उत्तर है–'**हमारे लिये**'। वे इन कर्मो द्वारा हमें कर्मयोग की दीक्षा दे रहे हैं। हम तो इच्छाओं के दास बने हुए है, हर स्थूल तथा सूक्ष्म फल की इच्छा रखते हैं। इन इच्छाओं से हमें मुक्त करने के लिये इस अकिंचन साधु की सेवा-प्रवृत्ति है। हमें भगवत्कार्यों में जोड़कर हमारे चित्त की मलीनता को वे नष्ट करना चाहते हैं, हमें प्रभुमय–केवल प्रभुमय बनाकर अक्षरधाम-परमात्मधाम की ओर उन्मुख करके हमारे जन्म-जन्मांतर के बंधनों को वे काटना चाहते हैं।

तो हम अब छोड़ दे शंका-संशय। 'संशयात्मा विनश्यति'–श्री कृष्ण भगवान का यह स्पष्ट आदेश है। अपने आपको बुद्धिजीवी व्यक्ति मानने वालों की यह सबसे बड़ी कमजोरी है–परमात्मा को नहीं जानना ! हम व्यक्ति देखते हैं, व्यक्ति की वृत्ति-प्रवृत्तिओं को देखते हैं, इसके फल देखते हैं फिर भी मन चुरा लेते हैं। परिणाम रूप भ्रम को मानते हैं और परमतत्त्व की ओर से मुंह मोड़ लेते है। निरुपाधिक परब्रह्म परमात्मा मानवजाति के लिये सोपाधिक स्वरूप धारण करके इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रगट रूप में जब विचरण करते हैं, तब आत्मा चैतन्य की साक्षी की भी अवहेलना करके अमृत को छानने की कोशिश करता है। अमृत हाथ में आता नहीं है और छानने का कोरा कपड़ा ही हाथ में रह जाता है। ऐसी गलती बहुतों ने की है–

महाराज स्वयं प्रत्यक्ष थे तब स्वयं स्पष्ट कहते थे कि मैं पुरुषोत्तम हूँ......इसकी प्रतीति भी वे करवाते थे किन्तु अनेकों ने यह नहीं माना और महाराज को नहीं पहचाना। महाराज के सामीप्य में रहने वालों ने भी महाराज के साथ तादात्म्यता सिद्ध नहीं की। परिणामरूप काल, कर्म, माया के फंदे में ही रह गये। किसी-किसी को महाराज में निष्ठा थी, किन्तु महाराज के स्पष्ट वचन थे कि यह गुणातीतानन्दस्वामी मेरा अक्षरधाम है, मैंने मेरे अक्षरधाम के साथ जन्म लिया है, तब भी अनास्था रह गई। इसमें संत भी थे, सेवक भी थे और अन्य भी थे। आगे चलकर पू. भगतजी महाराज, पू.जागा स्वामी, पू. अदाश्री, पू. शास्त्रीजी महाराज, पू, योगी जी महाराज आदि महान गुणातीतपरम्परा के वाहकों को भी यह भोगना पड़ा। किसी की श्रद्धा पू.भगतजी महाराज तक सीमित रही, किसी की पू. शास्त्री महाराज तक और अब किसी की पू. योगीजी महाराज! तक प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिश्री और प.पू. महंतस्वामीजी स्पष्टरूप से गुणातीत परंपरा के आज वाहक है, परमात्म स्वरूप है, इनकी वृत्ति-प्रवृत्तियाँ परमात्म स्वरूप है किन्तु आत्मा की अंधेरी रात में हम स्पष्ट सूर्यप्रकाश देखते हुए भी संशयग्रस्त है।

कुछ लोगों को श्रद्धा नहीं है, कुछ लोग अभी कौतूहल से देख रहे हैं, कुछ लोगों में धर्मनिष्ठा है किन्तु प्रत्यक्ष की निष्ठा नहीं है। प.पू. स्वामीश्री के पुनीत मंगलमय प्रागट्दिन पर हमें हमारे हितार्थ आत्मचिंतन, आत्ममंथन करना है कि यह

पुरुष कौन है? इस आत्मंथन में सहारा लेना है इनकी वृत्ति-प्रवृत्तियों का। यदि प.पू. स्वामीश्री की छवि स्पष्ट रूप से चित्त में न उठे तब भी इनकी प्रवृतियों में जुड़ जाना है। उपनिषद् कहता है– ‘श्रद्धया देयं अश्रद्धया देयम्’। अर्थात्–श्रद्धा हो तब भी दो, श्रद्धा न हो तब भी दो। श्री रामकृष्ण परमहंसदेव को किसी ने कहा–‘महाराज ! श्रद्धा नहीं है, अतः मैं धर्माचरण नहीं करता हूँ। क्या लाभ !’ परमहंसदेव का उत्तर था–

‘‘ जो व्यक्ति नदी में स्वेच्छा से स्नान करने जाता है वह तो गीला होता है,किन्तु जो व्यक्ति अकस्मात् या किसी के गिराने से नदी में पड़ता है वह भी गीला तो होगा ही।’’

अतः इनकी प्रवृत्तिओं में साथ देने से धीरे-धीरे प.पू. स्वामीश्री की विभूतियों का परिचय हो ही जायेगा। हाँ, पहचानने वाले की बात ही अलग है। कहने का तात्पर्य यह है कि ‘पहचान’ के चक्कर में आप संशयात्मा रह जाओ और इसके पहले काल आपको खा न जाय।

प्रगट की पहचान–प्रगट की निष्ठा बहोत बड़ी चीज है। परमात्मा के वाहक और उत्तम भक्त गरुड़जी को भी रामचन्द्रजी की सम्यक् पहचान नहीं हुई थी, ब्रह्मा को भी श्रीकृष्ण एक सामान्य गाय चराने वाला ग्वाला लगा था। तत्त्वस्वरूप में पहचानना बहुत कठिन है, किन्तु इसके बिना अंतिम निःश्रेयस् का मार्ग भी तो नहीं है। हमारी इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि आदि ससीम है और भगवत्स्वरूप संत असीम है। उसके सामीप्य बिना आत्मा की अंधेरी रात नष्ट नहीं होगी, सुख-दुःख, जन्म-मरण, काल, कर्म, माया हमें नष्ट करती रहेगी.....फिर हार्ट अटेक होते रहेंगे, ब्लड प्रेशर की भट्ठियाँ जलती रहेंगी, तन के और मन के रोग के विशेषज्ञों के पास दौड़ते रहना पड़ेगा और सांसारिक जाल से आच्छादित, विकारों से आच्छादित चित्त का बोझा उठा कर जीना पड़ेगा.....जैसे आज करोड़ों जी रहे हैं।

परन्तु, आज प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी के प्रागट्यदिन पर हमें उनसे हरि प्रसाद के रूप में चित्त की शान्ति को प्राप्त करना है। हमें उनसे ऐसी प्रार्थना करनी है जिससे हमारे चित्त की घोर अशान्ति नष्ट हो जाय। इसलिए चलिये, सब मिल कर सहृदयभाव से, गदगद कंठ से प्रार्थना करें– ‘हे महाराज, हे स्वामी, हे काकाजी, हे पप्पाजी, हे स्वामीजी–

(1) हमें सरल बनाईए।

(2) हमें सश्रद्ध बनाईए।

(3) हमें सहृदयी बनाईए।

(4) हमें सेवाभावी-सेवाव्रती बनाईए।

(5) हमें दास के दास बनाईए।

(6) हमें रंक से रंक बनाईए।

(7) हमारे आंतर चक्षु खोलिये।

(8) हमारे प्रज्ञा चक्षु खोलिये।

(9) हमारे प्रकाशचक्षु खोलिये।

(10) हमें मानवजाति की दिव्यता का दर्शन करवाईए।

(1) हम जैसे भी हों, आप हमें अपना आश्रय दीजिए।

4 मई 80 के दिन हमारी यही प्रार्थना है।

दुनिया की सबसे बड़ी आपत्ति यह है कि मूर्खों का आत्मविश्वास कभी डगमगाता नहीं है और बुद्धिशालियों को अपने संशयों से कभी छुट्‌टी नहीं होती है।

**–ब्रटॉन्ड रसेल**

× × ×

संसार की किसी भी पदार्थ वस्तु को छूने तक का भी तुम्हारा अधिकार नहीं है यदि तुम उनकी संभाल न कर सको। इनकी संभाल भी हमें अपनी आसक्ति के कारण नहीं करनी है, परन्तु दिव्यचेतना का ही यह एक प्राकट्य है सा मान कर करनी है। पार्थिव चीजों का मन चाहा या अनुचित उपयोग करेंगे या उसको तोड़े-ताड़ेंगे या फेंक देंगे तो हम यौगिक चेतना का अनादर करते हैं और......पृथ्वी पर दिव्य सत्य की अवतारणा करवाने में हम बाधारूप हैं।

**–महर्षि अरविंद**

× × ×

मन के बन्धन जड़ है। इनका विश्वास कभी नहीं करना। विश्वास केवल चैतन्यस्वरूप संत का ही करना।

गुरु ही सब कुछ करता है, पर हमारा धर्म है कि उनकी ओर दृष्टि रखें।

**–प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी**

# The Supreme Divinity in Human Garbs

In the spiritual history of 20,000 years man has scientifically and technologically developed a great deal, but in the field of religion based on love and compassion, hs failed miserably. He has run the phase merely on emotions, instincts and ignorance not knowing his real self. As such the animal instincts has played an important role, which has ultimately resented in chaos, conflicts and unhappiness. With all the ways and miracles and inventions even still man is unhappy and full of tensions the solution is to accept the eternal truth of the existance of the divine power and manifestation of Jesus, Rama, Krishana or any divine prophet who can transform the crude nature by his gift-love and compassion, But, then like Hanuman and Gopis one has to accept and recognise the divinity in human form as supremely divine always and in all respects.

The birth day celebration of Swami Hariprasaddasjee is the most auspicious and memorable day for us. The supreme divinity has manifested in his human garbs....and all the devotees whoever are attached to him should also believe him as supremely divine. Shri Aurobindo also said the

same thing. The eternal truth here is that the supramental divinity is manifesting in human form to give His knowledge, ways of working known as divine plan, through the divine workers like Arjuna-to manifest divinity for the upliftment of the entire mankind. He has no discrimination and demarcation of differences between the pious person or the sinner, but he gives his light, his gift love and compassion like the sun and we as a child has to accept that love and offer our services in the same affection.

Pujya Hariprasad Swamijee is in permanent communion with the Supreme Being Sahajanand Swami and the divine power has been working through him which will purify the hearts of the sinners and transform the crude nature. The only inevitable condition for such transformation of crude nature is to accept this eternal truth of the divine manifestation in the human form and believing him as supremely divine like the munni of Kabirjee. One must surrender him totally. One may do it after the inner experience and reconcile one's faith with the intelligence. But then ultimately one has to surrender such divine perfect master like Arjuna to Lord Krisha, He will then transform us completely. But then our instincts will interfere. So it is our humble request to all sadhakas to remain open with pure heart and accept his gift-love and compassion which will enable us to reach the spiritual matruity and perfection and we will have a divine life in this world of chaos, tension and conflicts. This is Akshardham-the kingdom of heaven and is within us, also without and also beyond.

On this most auspicious day-the 4th May-we offer our deep gratitudes and prayers at the lotus feet of Brahmaswaroop Hariprasadswamijee and intensly aspire for his grace so that we also can have the Divine vision to do divine actions always inspired by the supreme divine master.

●

You have no right to use any material object whatsoever if you do not take care of it not because you are attached to it, but because it manifests something of the Divine consciousness.

The rough handling and careless breaking or waste and misuse of physical things is a denial of the Yogic consciousness and a great hindrance to the bringing down of the Divine truth to the material plance.

**-Shri Aurobindi**

Regd. No D (D) 655

## व्रतोत्सवसूची

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | दि. | 4.5.80 | रविवार | प.पू.प्र.ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी का प्राकट्यदिन |
| 2. | दि. | 11.5.80 | रविवार | अपरा भागवत एकादशी, व्रत |
| 3. | दि. | 12.5.80 | सोमवार | ब्र. स्व. योगीजी महाराज का प्राकट्यदिन |
| 4. | दि. | 23.5.80 | शुक्रवार | नवमी, श्री स्वामिनारायण जयंती |
| 5. | दि. | 25.5.80 | रविवार | कमला एकादशी, व्रत |
| 6. | दि. | 1.6.80 | रविवार | प.पू. पप्पाजी का दृष्टादिन |

**साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदास जी द्वारा योगी डिवाईन सोसाईटी,**
ए-103, अशोक विहार-III, दिल्ली-110052 फोनः 711838
मुद्रण स्थानः आर.के.प्रिंटर्स, 80डी, कमला नगर, दिल्ली-110007